4 कारक एवं विभक्ति

संस्कृत में **'साक्षात् क्रियान्वयित्वं कारकत्वम्'** के अनुसार क्रिया के साथ सीधा सम्बन्ध रखने वाले शब्दों को ही कारक कहते हैं।

जैसे– 'प्रयागे राजा स्वहस्तेन कोषात् निर्धनेभ्य: वस्त्राणि ददाति।' इस वाक्य में कारकों को निम्नांकित रूप में ज्ञात कर सकते हैं–

क: ददाति?	राजा	प्रथमा विभक्ति (कर्त्ता कारक)
किं ददाति?	वस्त्राणि	द्वितीया विभक्ति (कर्म कारक)
केन ददाति?	हस्तेन	तृतीया विभक्ति (करण कारक)
केभ्य: ददाति?	निर्धनेभ्य:	चतुर्थी विभक्ति (सम्प्रदान कारक)
कस्मात् ददाति?	कोषात्	पञ्चमी विभक्ति (अपादान कारक)
कुत्र ददाति?	प्रयागे	सप्तमी विभक्ति (अधिकरण कारक)

उक्त वाक्य में 'राजा' आदि पदों का क्रिया के साथ सम्बन्ध है, अत: ये कारक हैं। संस्कृत में सम्बन्ध पद तथा सम्बोधन पद कारक नहीं माने जाते हैं।

जैसे– ''दशरथस्य पुत्र: वनम् अगच्छत्।''

यहाँ 'दशरथस्य' का सम्बन्ध 'पुत्र' (कर्त्ता) से तो है, किन्तु क्रिया 'अगच्छत्' से नहीं है। इसी प्रकार 'प्रभो! रक्ष' यहाँ 'रक्ष' क्रिया पद का 'प्रभो' से कोई सम्बन्ध नहीं है।

अत: संस्कृत में कारक छह प्रकार के होते हैं–

कर्त्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान और अधिकरण।

1. कर्त्ता कारक (प्रथमा विभक्ति)

सूत्र–स्वतन्त्र: कर्त्ता।

किसी भी क्रिया को स्वतन्त्रतापूर्वक करने वाले को कर्त्ता कहते हैं। कर्त्ता में प्रथमा विभक्ति का प्रयोग होता है।

जैसे–'राम: गृहं गच्छति।' इस वाक्य में गच्छति क्रिया को मोहन स्वतंत्र रूप से सम्पन्न कर रहा है, अत: वह कर्त्ता है।

2. कर्म कारक (द्वितीया विभक्ति)

१. सूत्र–कर्तुरीप्सिततमं कर्म। कर्मणि द्वितीया।

नियम– जिस शब्द पर क्रिया के व्यापार का फल पड़ता है, उसे कर्म कारक कहते हैं। जैसे–अहं **रामम्** पश्यामि (मैं राम को देखता हूँ)। इस वाक्य में देखने के व्यापार का फल 'राम' पर पड़ रहा है, अत: **'रामम्'** में कर्म कारक है। कर्म कारक का चिह्न 'को' है, किन्तु यह कभी-कभी अनुक्त (छिपा) भी रहता है; **जैसे–** 'राम पुस्तक पढ़ता है।' कर्तृवाच्य के कर्म कारक में द्वितीया विभक्ति होती है; **जैसे–** 'राम: **ग्रन्थं** पठति।' किन्तु कर्मवाच्य के कर्म कारक में प्रथमा विभक्ति होती है; **जैसे–** रामेण **ग्रन्थ:** पठ्यते। (राम के द्वारा ग्रन्थ पढ़ा जाता है)।

२. सूत्र– अकथितं च

नियम– दुह् (दुहना), याच् (माँगना), पच् (पकाना), दण्ड (दण्ड देना), रुध् (रोकना), प्रच्छ् (पूछना), चि (चुनना), ब्रू (बोलना), शास् (शासन करना), जि (जीतना), मथ् (मथना), मुष् (ठगना), नी (ले जाना), हृ (हरण करना), कृष् (जोतना), वह् (ढोना)। संस्कृत में ये सोलह धातुएँ हैं तथा इनके अर्थ वाली दूसरी धातुएँ 'द्विकर्मक' हैं। इनके योग में द्वितीया विभक्ति होती है।

इन धातुओं से सम्बद्ध हिन्दी से संस्कृत में अनुवाद करते समय विशेष सावधान रहना चाहिए **जैसे–** कृष्ण गाय से दूध 'दुहता है' में 'दुहता है' (दुह्) क्रिया का 'दूध' प्रधान कर्म में और 'गाय से' में 'से' सामान्य रूप से चिह्न होने के कारण अपादान कारक (पञ्चमी विभक्ति) ज्ञात होती है, किन्तु 'दुह्' धातु के द्विकर्मक होने के कारण 'गाय से' की संस्कृत **'धेनोः'** (पञ्चमी) न होकर **-धेनुम्'** (द्वितीया) ही होगी और सम्पूर्ण वाक्य की संस्कृत **'कृष्णः धेनुम् दुग्धं दोग्धि'** होगी। यह दूसरा कर्म गौण (अप्रधान) कर्म कहा जाता है।

३. सूत्र–कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे।

नियम– समय तथा दूरी को बताने वाले शब्दों में निरन्तरता बतलाने के लिए द्वितीया विभक्ति होती है अर्थात् जितने समय अथवा जितनी दूरी तक कोई काम लगातार होता रहे या कोई वस्तु लगातार हो तो समय तथा दूरी वाचक शब्दों में द्वितीया विभक्ति होती है। **जैसे–**

समय– 'रामः **चतुर्दशवर्षाणि** वने न्यवसत्।' (राम चौदह वर्ष तक वन में रहे)। यहाँ वन में रहने का काम लगातार चौदह वर्षों तक हुआ है और 'चतुर्दश वर्ष' समयवाचक शब्द है, अतः **चतुर्दशवर्षाणि** में द्वितीया है।

दूरी– 'क्रोशम् कुटिलता नदी' (नदी एक कोस तक टेढ़ी है)। नदी एक कोस तक लगातार टेढ़ी बही है और **क्रोश** दूरीवाचक शब्द है, अतः 'क्रोशम्' में द्वितीया विभक्ति है।

४. सूत्र–अधिशीङ्स्थासां कर्म।

नियम– यदि शीङ् (सोना), स्था) (ठहरना) तथा आस् (बैठना) धातुओं से पहले 'अधि' उपसर्ग आये तो इनके आधार में द्वितीया होती है; **जैसे–**

बालः **शय्यां** अधिशेते। (बालक खाट पर सोता है।)

रामः **गृहं** अधितिष्ठति। (राम घर में स्थित है।)

राजा **सिंहासनं** अध्यास्ते। (राजा सिंहासन पर बैठता है।)

विशेष– यदि शीङ्, स्था और आस् धातुओं से पहले 'अधि' उपसर्ग नहीं होगा, तो उनके आधार में सप्तमी ही होगी, द्वितीया नहीं। **जैसे–** बालः शय्याम् शेते।

५. सूत्र– अभितः परितः समया निकषा हाप्रतियोगेऽपि।

नियम– अभितः (सब ओर), परितः (चारों ओर), समया (पास), निकषा (निकट), हा (हाय) और प्रति (की ओर, को, के, लिए) के योग में द्वितीया होती है; **जैसे–**

ग्रामम् **अभितः** आम्रवृक्षाः सन्ति। (गाँव के सब तरफ (चारों ओर) आम के पेड़ हैं।)

दुर्गम् **परितः** परिखा अस्ति। (दुर्ग के चारों ओर खाई है।)

विद्यालयम् अमितः पादपः सन्ति। (विद्यालय के सब ओर पेड़ हैं।)

3. करण कारक (तृतीया विभक्ति)

१. सूत्र–साधकतमं करणम्। कर्तृकरणयोस्तृतीया।

नियम– जिसकी सहायता से कर्त्ता अपना कार्य पूरा करता है, उसमें करण कारक होता है और करण कारक में तृतीया विभक्ति होती है। इसका चिह्न 'से' तथा 'के द्वारा' होता है, **जैसे–**सः **नेत्राभ्यां** पश्यति। (वह नेत्रों से देखता है।) इसमें देखने का कार्य नेत्रों से होता है, अतः **नेत्राभ्याम्** में तृतीया है।

२. सूत्र–येनांगविकारः।

नियम– जिस अंग के द्वारा शरीरधारी में कोई विकार उत्पन्न हो जाता है, उसमें तृतीया विभक्ति होती है; **जैसे–** सः

नेत्रेण काण: अस्ति। (वह आँख से काना है।) इस वाक्य में आँख के द्वारा शरीरधारी में कानेपन का विकार उत्पन्न हो गया है, अत: **'नेत्रेण'** में तृतीया है। स: पादेन खञ्ज: अस्ति। पादेन में तृतीया विभक्ति है।

३. सूत्र– सहयुक्तेऽप्रधाने।

नियम– 'साथ' में अर्थ रखने वाले 'सह', 'साकम्', 'समम्', 'सार्धम्' शब्दों के योग में तृतीया विभक्ति होती है; **जैसे–** राम: **कृष्णेन** सह गच्छति। (राम कृष्ण के साथ जाता है।) इस वाक्य में 'कृष्ण तथा सह' का योग है, क्योंकि कृष्ण के साथ जाया जाता है, अत: **कृष्णेन** में तृतीया विभक्ति है।

4. सम्प्रदान कारक (चतुर्थी विभक्ति)

१.सूत्र– कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्। चतुर्थी सम्प्रदाने।

नियम– जिसको कोई वस्तु दी जाती है, वह सम्प्रदान कारक होता है और सम्प्रदान कारक में चतुर्थी विभक्ति होती है। इसका चिह्न 'के लिए' अथवा 'को' है। **जैसे–** राजा विप्राय **धेनुं** ददाति। (राजा ब्राह्मण को गाय देता है।) इस वाक्य में विप्र को धेनु दिये जाने का वर्णन है, अत: **'विप्र'** में चतुर्थी विभक्ति हुई।

२. सूत्र– रुच्यर्थानां प्रीयमाणः।

नियम– 'रुचि' का अर्थ रखने वाली धातुओं के योग से जिसे कोई वस्तु अच्छी लगती है, उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है; **जैसे–रामाय पठनं** रोचते। (राम को पढ़ना अच्छा लगता है।) इस वाक्य में राम को पढ़ना अच्छा लगता है तथा रुचि अर्थ वाली धातु **'रुच्'** का योग भी है। अत: **'रामाय'** में चतुर्थी हुई।

३. सूत्र–क्रुधद्रुहेर्ष्याऽसूयार्थानां यं प्रति कोपः।

नियम– क्रुध् (गुस्सा होना), द्रुह् (द्रोह करना, शत्रुता करना), ईर्ष्या (ईर्ष्या करना), असूय् (गुणों में दोष निकालना या जलन करना) धातुओं तथा इनकी समानार्थक धातुओं के योग में जिस पर क्रोध किया जाता है, द्रोह किया जाता है, ईर्ष्या की जाती है या असूया की जाती है; उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है। **जैसे–** स: **हरये** क्रुध्यति, दुह्यति, ईर्ष्यति असूयति वा। (वह हरि से क्रुद्ध होता है, द्रोह करता है, ईर्ष्या करता है अथवा असूया करता है।)

४. सूत्र– नमः स्वस्ति स्वाहा स्वधाऽलं वषट् योगाच्च।

नियम–नम: (नमस्कार), स्वस्ति (कल्याण), स्वाहा, स्वधा, अलम् (समर्थ, पर्याप्त, बराबर के जोड़ का) तथा वषट् (आहुति) के योग में चतुर्थी होती है; **जैसे–श्री गणेशाय नमः।** (श्री गणेश जी को नमस्कार है।) **प्रजाभ्य:** स्वस्ति। (प्रजा का कल्याण हो।) **अग्नये स्वधा।** (अग्नि के लिए बलि हैं।) गुरुवे नम:। (गुरु को नमस्कार)।

5. अपादान कारक (पञ्चमी विभक्ति)

१. सूत्र–ध्रुवमपायेऽपादानम्। अपादाने पञ्चमी।

नियम–जिससे प्रत्यक्ष रूप में अथवा कल्पित रूप में कोई वस्तु अलग होती है, वह अपादान कारक होता है। अपादान में पञ्चमी विभक्ति होती है। इसका चिह्न 'से' है; **जैसे–वृक्षात्** पर्णानि पतन्ति। (पेड़ से पत्ते गिरते हैं।) यहाँ 'वृक्ष' से पत्तों का अलग होना पाया जाता है, अत: **वृक्षात्** में पंचमी विभक्ति है।

२. सूत्र–भीत्रार्थानां भयहेतुः।

नियम–जिससे डरा जाता है या रक्षा की जाती है, उसमें पञ्चमी विभक्ति होती है। **जैसे–**साधु: **पापात्** विभेति। (साधु पाप से डरता है।)। वीर: नारीम् **दुष्टात्** रक्षति। (वीर दुष्ट से नारी की रक्षा करता है)।

३. सूत्र–आख्यातोपयोगे।

नियम–जिससे नियमपूर्वक कुछ पढ़ा जाता है, उसमें पञ्चमी विभक्ति होती है; **जैसे–**अहं **गुरोः** व्याकरणं पठामि। (मैं गुरुजी से व्याकरण पढ़ता हूँ)।

४. वार्तिक–जुगुप्साविरामप्रमादार्थानामुपसंख्यानम्।

नियम–जुगुप्सा (घृणा), विराम (बन्द हो जाना, अलग हो जाना, छोड़ देना, हटना), प्रमाद (भूल या असावधानी करना)

के समानार्थक शब्दों के साथ पञ्चमी होती है; **जैसे–सः पापात्** जुगुप्सते। (वह पाप से घृणा करता है।) स: **सत्यात्** न विरमते। (वह सत्य से नहीं हटता है।) स: **धर्मात्** न प्रमदते। (वह धर्म से प्रमाद नहीं करता है।) इन वाक्यों में क्रमश: **पापात्, सत्यात्** और **धर्मात्** में पंचमी विभक्ति है।

५. सूत्र–पृथग्विना नानाभिस्तृतीयाऽन्यतरस्याम्।

नियम–पृथक् (अलग), बिना और नाना शब्दों के योग में द्वितीया, तृतीया अथवा पञ्चमी होती है; **जैसे**–दशरथ: **रामम्, रामेण, रामात्** (वा) पृथक् जीवितुं नाशक्नोत्। (दशरथ राम के बिना जीवित न रह सके।) **रामम्, रामेण, रामात्** (वा) बिना लक्ष्मण: गृहे नावसत्। (राम के बिना लक्ष्मण घर पर न रहे।)

6. सम्बन्ध कारक (षष्ठी विभक्ति)

१. सूत्र–षष्ठी शेषे।

नियम–इस सूत्र का अर्थ यह है कि जो बात और विभक्तियों से नहीं बताई जा सकती, उनको बताने के लिए षष्ठी होती है। ये बातें सम्बन्ध विशेष हैं। जहाँ स्वामी तथा भृत्य (नौकर),जन्य तथा जनक, कार्य तथा कारण इत्यादि सम्बन्ध दिखाये जाते हैं, वहाँ षष्ठी होती है; जैसे–'**राज्ञः पुरुषः – राजा का पुत्र**'। यहाँ पर '**राजा**' स्वामी है, '**पुरुष**' भृत्य (नौकर) है। इस '**स्वामी तथा भृत्य**' का सम्बन्ध दिखाने के लिए '**राज्ञ:**' में षष्ठी हुई है। '**बालकस्य माता – बालक की माँ।**' यहाँ पर '**बालक**' जन्य अर्थात् '**पैदा होने वाला**' है और '**माता**' जननी अर्थात् '**पैदा करने वाली**' है, एवं इसमें '**जन्य-जनक**' सम्बन्ध है और इसी को दिखाने के लिए '**बालकस्य**' में षष्ठी विभक्ति हुई है। '**मृत्तिकायाः घटः –मिट्टी का घड़ा।**' यहाँ पर '**मिट्टी**' कारण है और '**घड़ा**' कार्य है एवं इसमें '**कार्यकारण**' सम्बन्ध है और इसी को दिखाने के लिए '**मृत्तिकायाः**' में षष्ठी हुई है।

२. सूत्र–षष्ठी हेतुप्रयोगे।

नियम–जब '**हेतु**' शब्द का प्रयोग होता है, तो जो शब्द कारण या प्रयोजन रहता है, '**वह**' और '**हेतु**' शब्द–दोनों षष्ठी में रखे जाते हैं, जैसे–'**अन्नस्य हेतोः वसति**' – वह अन्न के लिए (वास्ते) रहता है, अर्थात् अन्न पाने के प्रयोजन से रहता है। यहाँ रहने का कारण या प्रयोजन '**अन्न**' है, इसलिए '**अन्नस्य**' और '**हेतोः**' दोनों में षष्ठी हुई है।

''**अध्ययनस्य हेतोः काश्यां तिष्ठति – अध्ययन के लिए काशी में रहता है।**'' यहाँ पर रहने का प्रयोजन या कारण '**अध्ययन**' है, इसलिए '**अध्ययनस्य**' और '**हेतोः**' दोनों में षष्ठी हुई है।

7. अधिकरण कारक (सप्तमी विभक्ति)

१. सूत्र–आधारोऽधिकरणम्। सप्तम्यधिकरणे च।

नियम–जिस स्थान या वस्तु पर कोई कार्य होता है, उसे अधिकरण कहते हैं और अधिकरण में सप्तमी विभक्ति होती है। इसका चिह्न 'में' या 'पर' है। **जैसे**–बालक: **विद्यालये** पठति। (बालक विद्यालय में पढ़ता है।) यहाँ पढ़ने का कार्य 'विद्यालय' में हो रहा है। स: **स्थाल्यां** तण्डुलान् पचति। (वह पतीली में चावल पकाता है।) यहाँ पकाने का कार्य स्थाली में हो रहा है, अत: '**स्थाल्यां**' में सप्तमी विभक्ति है।

२. सूत्र–यतश्च निर्धारणम्।

नियम–जब किसी समुदाय में किसी धातु या व्यक्ति की कोई विशेषता बतलाई जाती है, तब उस समुदायवाचक शब्द में षष्ठी या सप्तमी होती है, **जैसे–गवां, गोषु** वा कृष्णा बहुक्षीरा। (गायों में काली गाय अधिक दूध देती है।) यहाँ गायों के समुदाय में 'बहुक्षीरा' विशेषण के द्वारा कृष्णा की विशेषता बतलायी गई है, अत: '**गवां तथा गोषु**' में षष्ठी और सप्तमी हुई।

३. सूत्र–साध्वसाधुप्रयोगे च।

नियम–साधु और असाधु के प्रयोग में भी सप्तमी विभक्ति होती है; **जैसे**–साधु: कृष्णो **मातरि** (कृष्ण अपनी माँ के लिए बहुत अच्छे थे।) असाधु: **मातुले** (पर अपने मामा के लिए बहुत बुरे थे।) यहाँ '**मातरि**' और '**मातुले**' में सप्तमी विभक्ति है।

अभ्यास-प्रश्न

(क) १. **कारक किसे कहते हैं? उदाहरण देकर समझाइए।**

२. **विभक्ति कितनी है? प्रत्येक का परिचय दीजिए।**

३. **सूत्र लिखकर निम्नांकित कारकों के उदाहरण दीजिए—**
कर्म, करण, अपादान, अधिकरण।

४. **किन्हीं तीन वाक्यों के पदों में नियमोल्लेखपूर्वक विभक्ति का कारण लिखिए—**
(अ) **तिलेषु** तैलम्। (ब) रामः **जलेन** मुखं प्रक्षालयति।
(स) रामः **तापसेभ्यः** अभयं ददाति। (द) कृष्णः **प्रयागात्** काशीं गच्छति।

५. **निम्नलिखित रेखाङ्कित (काले) पदों में से एक में कारक एवं विभक्ति का नामोल्लेख कीजिए—**
(अ) रामः **बाणेन** रावणं हतवान्। (ब) **बालकाय** पुस्तकं ददाति।
(स) **सा** गृहं गच्छति। (द) **भवतः** नाम किम्।

६. **निम्नलिखित रेखाङ्कित (काले) पदों में से किसी एक में कारक तथा विभक्ति का नाम लिखिए—**
(अ) **रामेण** सह लक्ष्मणः अगच्छत्। (ब) नदी **पर्वतात्** निर्गच्छति। (स) **छात्रेषु** देवदत्तः कुशाग्रबुद्धिः।

७. 'हरिः बलिं बसुधा याचते' वाक्य के रेखांकित पद में विभक्ति का उल्लेख कीजिए।

८. 'पुरोहिताय दक्षिणां ददाति' में पुरोहिताय पद में कौन-सी विभक्ति है?
'भूमौ पतति आम्रफलं विपक्वम्' यहाँ भूमौ पद में कौन-सी विभक्ति है?

९. **(क) निम्नलिखित रेखाङ्कित (काले) पदों में कारक तथा विभक्ति का नाम लिखिए—**
अध्यापकः **छात्राय** पुस्तकं ददाति।
सः **गृहात्** विद्यालयं गच्छति।
अहं **पुस्तकं** पठामि।
सः **पुस्तकं** पठति।
सः **प्रकृत्या** दयालुः।
हिमालयात् गंगा प्रभवति।
माता **बालके** स्निह्यति।
बालकेन सह आगतः पिता।
ऋते **ज्ञानात्** न मुक्तिः।
बालकाय क्रीडनम् रोचते।
त्वम् **महयम्** पुस्तकं देहि।
बालकाय अपूपं रोचते।
भक्तः **शिवं** भजति।
काव्येषु नाटकं रम्यम्।
सीता **लेखन्या** अलिखत्।
सः **भिक्षुकाय** रूप्यकं यच्छति।
पिता **पुत्राय** पुस्तकं ददाति।
मुनिः **वने** वसति।
गङ्गा **हिमालयात्** निर्गच्छति।
सः **रामाय** पुस्तकं ददाति।
अहम् **रामेण** सह गच्छामि।

सम्मोहात् स्मृति विभ्रम:।
राम: **विद्यालयं** गच्छति।
नदीषु गंगा श्रेष्ठा।
रसेषु करुण: श्रेष्ठ:।
राम: **वनं** गच्छति।
ब्राह्मणेभ्य: धनानि ददाति।
स: तण्डुलानि **ओदनं** पचति।
नमो **भगवते** वासुदेवाय।
सिंहात् बिभेति मृग:।
बालकेभ्य: मोदका: रोचन्ते।
शिशु: **प्रकृत्या** सरल: अस्ति।
मह्यम् पठनं रोचते।
राम: चतुर्दश वर्षाणि **वने** न्यवसत्।
गवां कृष्णा बहुक्षीरा।
राम: **ब्राह्मणेभ्य:** धनानि ददाति।
गुरुवे नम:।
कन्दुकेन क्रीडति।
वृक्षाय जलं देहि।
प्रासादात् बालिका पतति।
गां दोग्धि पय:।
रामेण **बाणेन** हतो बाली।
बालका: **फलानि** खादंति।
राम: **अश्वेन** गच्छति।
उद्याने पुष्पाणि सन्ति।
वयम् **पुस्तकं** पठाम:।
जलेन सिञ्चति।
मोक्षे इच्छा अस्ति।
सा **लेखिन्या** लिखति।
स: **अक्ष्णा** काण:।
आग्नये स्वाहा।
बालक: **अश्वात्** पतति।
मेघा: **वर्षणाय** गर्जन्ति।
इमे: छात्रा: **ध्यानेन** पठन्ति।
स: **मातरि** स्निह्यति।

(ख) सही विकल्प चुनकर लिखिए–

१. कारक कितने होते हैं?

(अ) नौ (ब) छह (स) सात (द) आठ

२. करण कारक में कौन-सी विभक्ति होती है?

(अ) द्वितीया (ब) तृतीया (स) चतुर्थी (द) पञ्चमी

३. 'छात्राः पठनाय विद्यालयं गच्छन्ति' में 'पठनाय' शब्द में कौन-सी विभक्ति है?
(अ) द्वितीया (ब) चतुर्थी (स) पञ्चमी

४. 'गवां कृष्णा बहुक्षीरा' वाक्य में 'गवां' में कौन-सी विभक्ति है?
(अ) प्रथमा (ब) द्वितीया (स) षष्ठी (द) पञ्चमी

५. चतुर्थी विभक्ति है—
(अ) करण कारक में (ब) सम्प्रदान कारक में (स) कर्म कारक में

६. 'वृद्धः दण्डेन चलति' वाक्य में 'दण्डेन' में कौन-सी विभक्ति है?
(अ) द्वितीया (ब) तृतीया (स) पञ्चमी (द) षष्ठी

७. 'नृपः ब्राह्मणाय धनं ददाति' में 'ब्राह्मणाय' शब्द में कौन-सी विभक्ति है?
(अ) तृतीया (ब) चतुर्थी (स) सप्तमी (द) पञ्चमी

८. 'त्वं गुरोः आज्ञां पालयेः' में 'गुरोः' में कौन-सी विभक्ति है?
(अ) प्रथमा (ब) द्वितीया (स) चतुर्थी (द) षष्ठी

९. 'वृक्षात् पत्राणि पतन्ति' में 'वृक्षात्' में कौन-सी विभक्ति है?
(अ) तृतीया (ब) चतुर्थी (स) पञ्चमी

१०. 'शिशुः प्रकृत्या सरलः भवति' इस वाक्य में 'प्रकृत्या' में कौन-सी विभक्ति है?
(अ) तृतीया (ब) पञ्चमी (स) प्रथमा (द) सप्तमी

११. 'सः नगरे वसति' वाक्य में 'नगरे' में कौन-सी विभक्ति है?
(अ) प्रथमा (ब) तृतीया (स) सप्तमी (द) पञ्चमी

१२. '<u>स्मृतिभ्रंशात्</u> बुद्धिनाशः भवति' इस वाक्य के रेखांकित पद में कौन-सी विभक्ति है?
(अ) द्वितीया (ब) तृतीया (स) चतुर्थी (द) पञ्चमी

१३. 'सिंहः वने वसति' में 'वने' पद में कौन-सी विभक्ति है?
(अ) प्रथमा (ब) सप्तमी (स) चतुर्थी

१४. 'तिलेषु तैलम्' वाक्य में 'तिलेषु' पद में प्रयुक्त विभक्ति है—
(अ) तृतीया (ब) पञ्चमी (स) सप्तमी (द) चतुर्थी

१५. 'धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे' यहाँ रेखांकित पद में कौन-सी विभक्ति है?
(अ) प्रथमा (ब) तृतीया (स) पञ्चमी (द) सप्तमी

१६. बुद्धिनाशात् मरणं ध्रुवम्—इस वाक्य में 'बुद्धिनाशात्' में कौन-सी विभक्ति है?
(अ) द्वितीया (ब) चतुर्थी (स) पञ्चमी (द) षष्ठी

१७. 'नदी पर्वतात् निर्गच्छति।' वाक्य में पर्वतात् पद में प्रयुक्त विभक्ति है—
(अ) द्वितीया (ब) तृतीया (स) पञ्चमी (द) षष्ठी

१८. 'इदं कस्य गृहम् अस्ति' वाक्य में 'कस्य' में कौन-सी विभक्ति है?
(अ) द्वितीया (ब) चतुर्थी (स) षष्ठी (द) सप्तमी

१९. 'चौरात् विभेति' में चौरात् पद में कौन-सी विभक्ति है?

२०. '<u>नेत्राभ्याम्</u> अश्रूणि पतन्ति।' में रेखांकित पद में कौन-सी विभक्ति है?
(अ) सप्तमी (ब) चतुर्थी (स) पञ्चमी (द) तृतीया

●●●